भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान में डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जन्मदिन (3 दिसम्बर 2016) पर कृषि शिक्षा दिवस का आयोजन

भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान ने स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति भारत रत्न, डॉ राजेंद्र प्रसाद, की एक सौ इकतीसवीं जन्म शताब्दी पर कृषि शिक्षा दिवस मनाया गया।

भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान की निदेशक डॉ रविंदर कौर, ने कृषि शिक्षा दिवस पर अपने स्वागत भाषण में भारत सरकार की ओर से डॉ. राजेंद्र प्रसाद के जन्म दिवस को कृषि शिक्षा दिवस के रूप में मनाने को एक सराहनीय कदम बताया । उन्होंने जानकारी दी कि भारतीय कृषि अनुसंधान संसथान सदैव कृषि शिक्षा को बढ़ावा देता रहा है और हर वर्ष २६ विषयों में स्नातकोत्तर एवं शोध (पी.एच.डी.) डिग्री प्रदान करता है। हालाँकि उन्होंने कृषि के प्रति छात्रों में कम रुझान पर चिंता व्यक्त की और बताया कि अभियांत्रिकी एवं चिकित्सा विषयों की तुलना में कृषि में बहुत कम छात्र अपना भविष्य बनाते हैं। कृषि की इस निम्न दृश्यता एवं कार्यदल को बढ़ने के लिए उन्होंने सुझाव दिया कि कृषि विज्ञान को प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाये जिससे छात्र कृषि विज्ञान में अपनी अभिरुचि विकसित कर सकें व कृषि को चिकित्सा ,अभियांत्रिकी व अन्य विज्ञान विषयों के साथ जोड़ा जाये ताकि कृषि के प्रति एक आम आदमी के दृष्टिकोण में बदलाव लाया जा सके।

श्री डी.पी. सिन्हा, ट्रस्टी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली ने अपने व्याख्यान में भारत कि एतिहासिक प्रष्ठभूमि पर प्रकाश डाला और स्वन्तान्त्रता से पूर्व भारत में कृषि की क्या स्थिति थी इस पर विस्तार से जानकारी दी, उन्होंने बताया किस प्रकार भारत में अनेको अकाल पड़े और अन्न उत्पादन का स्तर बहुत निम्न था। उन्होंने उस समय की तुलना में आज भारत कृषि के बहुत से क्षत्रों में न सिर्फ आत्मनिर्भर है बल्कि विश्व में एक बेहतरीन निर्यातक भी है। इसके लिए उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

श्री हुकुमदेव नारायण यादव, माननीय संसद सदस्य एवं अध्यक्ष, कृषि -संसदीय स्थायी समिति, भारत सरकार , कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। अपने भाषण के दौरान उन्होंने किसान कि समस्याओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने अनुभव से मार्गदर्शन दिया । उन्होंने समस्या, स्वरुप, गति, दिशा एवं निवारण का सूत्र दिया जिससे मूल स्तर पर कृषि समस्याओं का निदान किया जा सके। उन्होंने कृषि शिक्षा कि समय-समय पर समीक्षा करने का भी सुझाव दिया।

इस कार्यक्रम में भा.कृ.अ.प.-भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान में अनेक गतिविधियों की एक श्रृंखला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर " सुखी किसान, सुखी भारत" विषय पर एक चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमे कक्षा ९-१२ के विभिन्न विद्यालयों के लगभग ३० छात्रों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आन्ध्र सोसाइटी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के आर. मुरली को मिला व द्वितीय स्थान स्प्रिंगडेल अकादमी की मरियम हसन को, तृतीय पुरुस्कार सेंट् थॉमस स्कूल की आरुषि एवं मोहम्मद अरमान, राजकीय बाल विद्यालय को सांत्वना पुरुस्कार मिला। सभी विजयी छात्रों को पुरुस्कार स्वरुप डॉ. राजेन्द्र प्रसाद कि आत्मकथा की प्रति भेंट की गई। इस दिन स्नातकोत्तर महाविद्यालय के छात्रो द्वारा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जिसका शीर्षक " कृषकों कि आमदनी दुगनी करने में कृषि कि भूमिका" था। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान संसथान के छात्र जय प्रकाश को मिला। द्वितीय स्थान पर प्रियंका उप्रेती रही। वादविवाद प्रतियोगिता जिसका शीर्षक " क्या मै अपने बच्चो को व्यावसायिक कृषि करने दूंगी/ दूंगा था। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्रीति प्रदर्शनी को और द्वितीय स्थान पंखुरी सिंघल को मिला। प्रथम निबंध लेखन एवं वादविवाद प्रतियोगिता में प्रथम पुरुस्कार के रूप में एक हज़ार रूपये का नकद पुरुस्कार एवं प्रमाण पत्र एवं द्वितीय पुरुस्कार में पांच सौ रूपये का नकद पुरुस्कार एवं प्रमाणपत्र दिए गये। सभी पुरुस्कारों का वितरण

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री हुकुमदेव नारायण, माननीय सदस्य, लोकसभा एवं अध्यक्ष, संसदीय स्थाई समिति (कृषि), भारत सरकार द्वारा किया गया।

डॉ जे.पी. शर्मा, संयुक्त निदेशक (प्रसार) ने सभागार में उपस्थित सभी का कृषि शिक्षा दिवस पर सम्मिलित होने के लिए आभार प्रकट किया व उन्होंने माननीय अतिथि श्री डी.पी. सिन्हा एवं श्री हुकुमदेव नारायण यादव के व्यक्तित्व कि सराहना करते हुए उनसे प्रेरणा लेने का आग्रह किया।